भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में आधुनिक माध्यमों की भूमिका : एक समीक्षा अध्ययन

***डॉ. मधु बजाज**

सारांश

भारतीय लोक संगीत भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो विभिन्न क्षेत्रों की सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परंपराओं को अभिव्यक्त करता है। लोक संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामुदायिक जीवन, सांस्कृतिक स्मृति तथा लोक ज्ञान के संरक्षण का भी सशक्त साधन है। वैश्वीकरण, नगरीकरण तथा आधुनिक जीवनशैली के प्रभावों के कारण लोक संगीत की अनेक परंपराएँ विलुप्ति के संकट का सामना कर रही हैं। ऐसे समय में आधुनिक संचार माध्यमों ने लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेडियो, दूरदर्शन, ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग, डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया तथा ऑनलाइन मंचों ने लोक संगीत को नए श्रोताओं तक पहुँचाने, उसका दस्तावेजीकरण करने तथा कलाकारों को व्यापक पहचान प्रदान करने में योगदान दिया है। प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में आधुनिक माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करना है। उपलब्ध साहित्य के आधार पर अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक माध्यमों ने लोक संगीत को नई दृश्यता और वैश्विक पहुँच प्रदान की है, किन्तु इसके साथ व्यावसायीकरण, प्रामाणिकता तथा सांस्कृतिक एकरूपता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि आधुनिक माध्यम लोक संगीत के संरक्षण के प्रभावी उपकरण सिद्ध हो सकते हैं, बशर्ते उनका उपयोग सांस्कृतिक संवेदनशीलता और संरक्षणात्मक दृष्टिकोण के साथ

किया जाए।

मुख्य शब्दः भारतीय लोक संगीत, सांस्कृतिक विरासत, आधुनिक माध्यम, डिजिटल मीडिया, लोक कलाकार, सांस्कृतिक संरक्षण, सोशल मीडिया।

1. प्रस्तावना

भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है और यह विविधता उसकी भाषाओं, संस्कृतियों, रीति-रिवाजों तथा कलात्मक अभिव्यक्तियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारतीय लोक संगीत इसी सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है। लोक संगीत किसी विशेष क्षेत्र, समुदाय अथवा जनसमूह के सामूहिक अनुभवों, भावनाओं, मान्यताओं तथा जीवन-पद्धति की अभिव्यक्ति है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित और प्रसारित होता रहा है। भारतीय लोक संगीत में ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति, लोक आस्थाएँ, धार्मिक परंपराएँ, सामाजिक संबंध तथा ऐतिहासिक घटनाएँ जीवंत रूप में प्रतिबिंबित होती हैं (शर्मा, 2012)।

भारतीय लोक संगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी क्षेत्रीय विविधता है। राजस्थान के मांगणियार और लंगा गायन, पंजाब के टप्पे और गिद्धा गीत, उत्तर प्रदेश की कजरी और बिरहा, बिहार की सोहर और चैता, बंगाल के बाउल गीत, गुजरात के गरबा गीत, महाराष्ट्र की लावणी तथा असम के बिहू गीत भारतीय लोक संगीत की समृद्ध परंपरा को दर्शाते हैं (रानाडे, 2011)। ये लोक परंपराएँ केवल संगीत की विधाएँ नहीं हैं, बल्कि स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान का आधार भी हैं।

परंपरागत रूप से लोक संगीत का संरक्षण सामाजिक और सामुदायिक संरचनाओं के माध्यम से होता था। परिवार, समुदाय, धार्मिक उत्सव, लोक पर्व तथा सामाजिक समारोह लोक संगीत के संरक्षण और प्रसार के प्रमुख माध्यम थे। किंतु आधुनिकता, औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभावों ने इन पारंपरिक संरचनाओं को प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप अनेक

लोक संगीत परंपराएँ धीरे-धीरे कमजोर होती गईं और कुछ विलुप्ति के कगार पर पहुँच गईं (सिंह, 2016)।

वैश्वीकरण के प्रभाव ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है, किंतु इसके साथ सांस्कृतिक एकरूपता की प्रवृत्ति भी विकसित हुई है। लोकप्रिय संस्कृति और व्यावसायिक मनोरंजन उद्योग के विस्तार के कारण लोक संगीत जैसी पारंपरिक कलाओं को अपेक्षाकृत कम स्थान मिलने लगा। युवा पीढ़ी का झुकाव आधुनिक लोकप्रिय संगीत की ओर बढ़ने से भी लोक संगीत की निरंतरता प्रभावित हुई है (कुमार, 2018)। ऐसे परिदृश्य में लोक संगीत के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता पहले की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

इसी संदर्भ में आधुनिक संचार माध्यमों का महत्व बढ़ता है। रेडियो और दूरदर्शन ने बीसवीं शताब्दी में लोक संगीत को व्यापक श्रोतावर्ग तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। आकाशवाणी के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों ने लोक कलाकारों और लोक परंपराओं को मंच प्रदान किया तथा लोक संगीत को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में योगदान दिया (माथुर, 2014)। दूरदर्शन के सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने भी लोक संगीत को जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इक्कीसवीं शताब्दी में डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास ने लोक संगीत संरक्षण की संभावनाओं को और अधिक विस्तृत किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, यूट्यूब तथा डिजिटल अभिलेखन परियोजनाओं ने लोक संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने के नए अवसर प्रदान किए हैं। अब लोक कलाकार अपनी प्रस्तुतियों को सीधे ऑनलाइन मंचों पर साझा कर सकते हैं तथा व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँच सकते हैं। इससे न केवल लोक संगीत की दृश्यता बढ़ी है, बल्कि लोक कलाकारों के लिए नए आर्थिक अवसर भी उत्पन्न हुए हैं (चौधरी, 2019)।

डिजिटल माध्यमों ने लोक संगीत के दस्तावेजीकरण और संरक्षण को भी सरल बनाया है। पहले

लोक परंपराओं का अधिकांश ज्ञान मौखिक रूप से संरक्षित रहता था, जिसके कारण उसके लुप्त होने की संभावना अधिक रहती थी। वर्तमान समय में ऑडियो, वीडियो तथा डिजिटल अभिलेखन तकनीकों के माध्यम से लोक संगीत की रिकॉर्डिंग और दीर्घकालिक सुरक्षा संभव हो गई है (फैनकोर्ट, 2019)। इससे भविष्य की पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने में सहायता मिलती है।

हालाँकि आधुनिक माध्यमों ने लोक संगीत के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, फिर भी इनके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। व्यावसायीकरण, प्रामाणिकता का संकट, सांस्कृतिक रूपांतरण तथा कॉपीराइट संबंधी समस्याएँ इस क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। अनेक बार डिजिटल मंचों पर लोक संगीत को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से उसके मूल स्वरूप में परिवर्तन कर दिया जाता है, जिससे उसकी सांस्कृतिक विशिष्टता प्रभावित हो सकती है (वर्मा, 2017)। इसलिए आधुनिक माध्यमों की भूमिका का समग्र और आलोचनात्मक मूल्यांकन आवश्यक है।

प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन इसी आवश्यकता की पृष्ठभूमि में तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में आधुनिक माध्यमों की भूमिका का अध्ययन करना तथा उपलब्ध साहित्य के आधार पर इस विषय की प्रमुख प्रवृत्तियों, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करना है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय लोक संगीत की सांस्कृतिक एवं सामाजिक भूमिका का अध्ययन करना।
2. लोक संगीत के संरक्षण में आधुनिक माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया एवं ऑनलाइन मंचों के योगदान का मूल्यांकन करना।
4. लोक संगीत के समक्ष विद्यमान चुनौतियों एवं संभावनाओं का अध्ययन करना।

5. लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

2. भारतीय लोक संगीत : परम्परा, स्वरूप एवं सांस्कृतिक संदर्भ

भारतीय लोक संगीत भारतीय संस्कृति की उन जीवंत अभिव्यक्तियों में से एक है, जो सदियों से समाज के सामूहिक जीवन, अनुभवों, विश्वासों और परंपराओं को संरक्षित करती आ रही हैं। लोक संगीत का उद्भव किसी एक व्यक्ति या विशेष संगीतकार की रचना के रूप में नहीं हुआ, बल्कि यह समुदायों के सामूहिक अनुभवों और सांस्कृतिक जीवन का परिणाम है। इसी कारण लोक संगीत को जनसामान्य की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति माना जाता है। यह समाज के दैनिक जीवन, श्रम, उत्सव, धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक संबंधों तथा ऐतिहासिक स्मृतियों को संगीतात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है (रानाडे, 2011)।

लोक संगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी मौखिक परंपरा है। अधिकांश लोकगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होते रहे हैं। इनके संरक्षण और प्रसार में लिखित ग्रंथों की अपेक्षा सामुदायिक स्मृति की भूमिका अधिक रही है। यही कारण है कि लोक संगीत समय, स्थान और समुदाय के अनुसार निरंतर परिवर्तित एवं विकसित होता रहता है। लोक संगीत की यह गतिशीलता उसे जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखती है (शर्मा, 2012)।

भारतीय लोक संगीत का स्वरूप अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में लोक संगीत की विशिष्ट परंपराएँ विकसित हुई हैं, जिनका संबंध स्थानीय भाषा, संस्कृति, भौगोलिक परिस्थितियों तथा सामाजिक संरचना से है। राजस्थान के मांगणियार और लंगा समुदायों का संगीत, पंजाब के टप्पे और गिद्धा गीत, उत्तर प्रदेश की कजरी और बिरहा, बिहार की सोहर और चैता, बंगाल के बाउल गीत, महाराष्ट्र की लावणी, गुजरात के गरबा गीत तथा असम के बिहू गीत भारतीय लोक संगीत की विविधता और समृद्धि को प्रदर्शित करते हैं (मिश्र, 2015)। इन सभी परंपराओं में स्थानीय जीवन के अनुभव, भावनाएँ और सांस्कृतिक मूल्य निहित रहते हैं।

लोक संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संगठन और सामुदायिक एकता का भी महत्वपूर्ण साधन है। ग्रामीण समाजों में विवाह, जन्म, त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान, कृषि कार्य तथा अन्य सामाजिक अवसरों पर लोकगीतों का सामूहिक गायन सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करता है। लोक संगीत सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देता है तथा सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (सिंह, 2016)। इस प्रकार लोक संगीत सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग है।

भारतीय लोक संगीत का धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनेक लोकगीत धार्मिक मान्यताओं, लोक देवताओं, संत परंपराओं तथा आध्यात्मिक अनुभवों से जुड़े होते हैं। राजस्थान के पाबूजी और तेजाजी से संबंधित लोकगीत, उत्तर भारत की भजन परंपराएँ तथा बंगाल के बाउल गीत इस बात के उदाहरण हैं कि लोक संगीत धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का वाहक भी है (शर्मा, 2012)। इन गीतों के माध्यम से धार्मिक ज्ञान, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक परंपराओं का प्रसार होता है।

लोक संगीत का एक महत्वपूर्ण कार्य सांस्कृतिक स्मृति का संरक्षण भी है। लोकगीतों में ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक संघर्षों, वीरता की गाथाओं तथा सामुदायिक अनुभवों का वर्णन मिलता है। अनेक लोकगीत ऐसे हैं जो किसी विशेष क्षेत्र के इतिहास और सामूहिक स्मृति को संरक्षित रखते हैं। इस दृष्टि से लोक संगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक इतिहास का भी महत्वपूर्ण स्रोत है (दुबे, 2014)। लोक परंपराओं के अध्ययन से किसी समाज की सांस्कृतिक संरचना और ऐतिहासिक विकास को समझने में सहायता मिलती है।

समकालीन समय में लोक संगीत के सामने अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा वैश्वीकरण के कारण पारंपरिक जीवनशैली में व्यापक परिवर्तन आया है। इसके परिणामस्वरूप वे सामाजिक परिस्थितियाँ भी बदल रही हैं, जिनमें लोक संगीत का जन्म और

विकास हुआ था। ग्रामीण समुदायों का विघटन, पारंपरिक व्यवसायों में कमी तथा आधुनिक मनोरंजन माध्यमों का विस्तार लोक संगीत की निरंतरता को प्रभावित कर रहा है (कुमार, 2018)। अनेक लोक परंपराएँ आज केवल सीमित समुदायों तक सिमटकर रह गई हैं।

युवा पीढ़ी की बदलती सांस्कृतिक प्राथमिकताएँ भी लोक संगीत के लिए चुनौती प्रस्तुत करती हैं। डिजिटल युग में लोकप्रिय संगीत, फिल्म संगीत तथा वैश्विक संगीत शैलियों की उपलब्धता बढ़ने के कारण लोक संगीत का पारंपरिक श्रोतावर्ग प्रभावित हुआ है। अनेक युवा पारंपरिक लोक संगीत की अपेक्षा आधुनिक लोकप्रिय संगीत को अधिक महत्व देने लगे हैं (वर्मा, 2017)। इस स्थिति ने लोक संगीत के संरक्षण की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है।

हालाँकि इन चुनौतियों के बावजूद लोक संगीत आज भी भारतीय सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। लोक संगीत की विशेषता यह है कि यह समय के साथ स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता रखता है। कई लोक परंपराएँ आधुनिक तकनीकों और नए मंचों के माध्यम से पुनर्जीवित हुई हैं तथा नए श्रोताओं तक पहुँची हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि लोक संगीत केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति भी है (चौधरी, 2019)।

सांस्कृतिक अध्ययन के दृष्टिकोण से लोक संगीत को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage) के रूप में देखा जाता है। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत उन परंपराओं, ज्ञान प्रणालियों और कलात्मक अभिव्यक्तियों को संदर्भित करती है जो किसी समुदाय की पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता से जुड़ी होती हैं। लोक संगीत इस विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इसके माध्यम से सांस्कृतिक मूल्य, सामाजिक अनुभव तथा सामुदायिक ज्ञान संरक्षित रहते हैं (यूनेस्को, 2011)। इसलिए लोक संगीत का संरक्षण केवल संगीत परंपराओं की रक्षा नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक स्मृति के संरक्षण का भी प्रयास है।

उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोक संगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संगठन, ऐतिहासिक स्मृति तथा सामुदायिक जीवन का आधार भी है। इसकी विविधता भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी प्रकृति को प्रतिबिंबित करती है। वर्तमान समय में जब वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभावों के कारण लोक परंपराएँ अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं, तब लोक संगीत के संरक्षण और संवर्धन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। इसी संदर्भ में आधुनिक माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे लोक संगीत को संरक्षित करने, दस्तावेजीकृत करने तथा नई पीढ़ियों तक पहुँचाने के प्रभावी साधन प्रदान करते हैं। अगले खंड में इसी भूमिका का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

3. आधुनिक माध्यम और भारतीय लोक संगीत : एक समीक्षात्मक अध्ययन

भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में आधुनिक माध्यमों की भूमिका पर विचार करते समय यह समझना आवश्यक है कि संचार तकनीकों के विकास ने सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के स्वरूप, प्रसार और संरक्षण की प्रक्रियाओं को गहराई से प्रभावित किया है। परंपरागत समाजों में लोक संगीत मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता था। इस प्रक्रिया में समुदाय स्वयं संरक्षणकर्ता और संवाहक की भूमिका निभाता था। किंतु सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन, शहरीकरण, वैश्वीकरण तथा आधुनिक जीवनशैली के विस्तार ने इस पारंपरिक संरक्षण प्रणाली को कमजोर किया है। ऐसी परिस्थितियों में आधुनिक संचार माध्यम लोक संगीत के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरे हैं (सिंह, 2016)।

आधुनिक माध्यमों में रेडियो का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। भारत में आकाशवाणी ने विभिन्न क्षेत्रों के लोक संगीत को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा प्रसारित लोकगीतों ने न केवल स्थानीय कलाकारों को मंच प्रदान किया, बल्कि

विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक परंपराओं को देश के अन्य भागों तक पहुँचाने का कार्य भी किया (माथुर, 2014)। रेडियो की व्यापक पहुँच के कारण लोक संगीत उन श्रोताओं तक भी पहुँचा जो इन परंपराओं से प्रत्यक्ष रूप से परिचित नहीं थे। इस प्रकार रेडियो ने लोक संगीत के संरक्षण और लोकप्रियकरण दोनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

दूरदर्शन ने भी लोक संगीत के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूरदर्शन के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, लोक कला उत्सवों तथा क्षेत्रीय प्रसारणों ने लोक कलाकारों और लोक परंपराओं को राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराया। दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों के संयोजन ने लोक संगीत को अधिक प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। अनेक लोक कलाकारों को राष्ट्रीय पहचान दूरदर्शन के माध्यम से ही प्राप्त हुई (वर्मा, 2017)। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन ने लोक संगीत को केवल मनोरंजन की सामग्री के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी स्थापित किया।

ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग तकनीकों का विकास लोक संगीत संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। परंपरागत रूप से लोक संगीत का अधिकांश भाग मौखिक रूप से संरक्षित रहता था, जिसके कारण उसके लुप्त होने की संभावना बनी रहती थी। रिकॉर्डिंग तकनीकों ने लोकगीतों, वाद्य परंपराओं तथा लोक कलाकारों की प्रस्तुतियों को स्थायी रूप से सुरक्षित रखने की सुविधा प्रदान की (दुबे, 2014)। विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा शोध संगठनों ने लोक संगीत के दस्तावेजीकरण के लिए रिकॉर्डिंग परियोजनाएँ संचालित की हैं, जिनके माध्यम से अनेक दुर्लभ लोक परंपराएँ संरक्षित की जा सकी हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी में डिजिटल मीडिया के विस्तार ने लोक संगीत संरक्षण की संभावनाओं को और अधिक व्यापक बना दिया है। इंटरनेट ने सांस्कृतिक सामग्री के प्रसार की सीमाओं को लगभग समाप्त कर दिया है। अब किसी भी क्षेत्र का लोक संगीत डिजिटल माध्यमों के द्वारा वैश्विक स्तर पर उपलब्ध कराया जा सकता है। डिजिटल मंचों ने लोक संगीत को केवल संग्रहित करने का

ही नहीं, बल्कि उसे नए श्रोताओं तक पहुँचाने का भी अवसर प्रदान किया है (फैनकोर्ट, 2019)। इस प्रकार डिजिटल मीडिया संरक्षण और संवर्धन दोनों उद्देश्यों को एक साथ पूरा करता है।

सोशल मीडिया ने लोक संगीत के प्रचार-प्रसार की प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब तथा अन्य सोशल मीडिया मंचों ने कलाकारों और श्रोताओं के बीच प्रत्यक्ष संवाद को संभव बनाया है। पहले लोक कलाकारों को व्यापक पहचान प्राप्त करने के लिए पारंपरिक मीडिया संस्थानों पर निर्भर रहना पड़ता था, जबकि अब वे स्वयं अपनी प्रस्तुतियों को ऑनलाइन साझा कर सकते हैं। इससे लोक कलाकारों को आत्म-प्रचार और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के नए अवसर प्राप्त हुए हैं (चौधरी, 2019)।

यूट्यूब विशेष रूप से लोक संगीत के संरक्षण और संवर्धन में एक प्रभावशाली मंच के रूप में उभरा है। इस मंच पर हजारों लोकगीत, लोक वाद्य प्रस्तुतियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम उपलब्ध हैं। यूट्यूब ने लोक संगीत को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई ऐसे लोक कलाकार जिन्हें पहले सीमित स्थानीय पहचान प्राप्त थी, डिजिटल मंचों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं (कुमार, 2018)। इससे लोक संगीत के प्रति नई पीढ़ी की रुचि भी बढ़ी है।

डिजिटल अभिलेखन (Digital Archiving) आधुनिक माध्यमों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है। डिजिटल अभिलेखन के माध्यम से लोक संगीत की ध्वनि रिकॉर्डिंग, वीडियो सामग्री, गीतों के शब्द, वाद्य परंपराएँ तथा सांस्कृतिक संदर्भों को व्यवस्थित रूप से संरक्षित किया जा सकता है। यह प्रक्रिया केवल संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि शोध, शिक्षा और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए भी महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है (यूनेस्को, 2011)। अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ डिजिटल अभिलेखन परियोजनाओं के माध्यम से लोक सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने का प्रयास कर रही हैं।

आधुनिक माध्यमों ने लोक कलाकारों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित किया है। पहले लोक कलाकारों की आय मुख्यतः स्थानीय आयोजनों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर निर्भर रहती थी। डिजिटल मंचों ने उनके लिए नए अवसरों का सृजन किया है। ऑनलाइन प्रस्तुतियाँ, डिजिटल प्रसारण और सोशल मीडिया प्रचार के माध्यम से कलाकार व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँच सकते हैं तथा नए आर्थिक स्रोत विकसित कर सकते हैं (चौधरी, 2019)। इससे लोक कला को आजीविका के एक व्यवहार्य माध्यम के रूप में भी देखा जाने लगा है।

तालिका 1 भारतीय लोक संगीत एवं आधुनिक माध्यमों से संबंधित प्रमुख अध्ययनों का सार

क्रम सं.	लेखक/वर्ष	अध्ययन का क्षेत्र	प्रमुख निष्कर्ष
1	रानाडे (2011)	भारतीय संगीत एवं सांस्कृतिक संदर्भ	लोक संगीत सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख माध्यम है।
2	शर्मा (2012)	भारतीय लोक परंपराएँ	लोक संगीत सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का संवाहक है।
3	दुबे (2014)	लोक संगीत का दस्तावेजीकरण	रिकॉर्डिंग तकनीकों ने संरक्षण को सुदृढ़ किया।
4	माथुर (2014)	आकाशवाणी और लोक संगीत	रेडियो ने लोक संगीत को राष्ट्रीय पहचान दिलाई।
5	सिंह (2016)	लोक संस्कृति और वैश्वीकरण	आधुनिकता से लोक परंपराओं के समक्ष नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं।

6	वर्मा (2017)	दूरदर्शन एवं सांस्कृतिक प्रसार	दृश्य-श्रव्य माध्यमों ने लोक संगीत की पहुँच बढ़ाई।
7	कुमार (2018)	डिजिटल मीडिया और लोक संगीत	इंटरनेट ने लोक संगीत को वैश्विक मंच प्रदान किया।
8	चौधरी (2019)	सोशल मीडिया और लोक कलाकार	डिजिटल मंचों ने कलाकारों को नए अवसर प्रदान किए।
9	फैनकोर्ट (2019)	डिजिटल संस्कृति और सांस्कृतिक संरक्षण	डिजिटल माध्यम संरक्षण एवं सहभागिता के प्रभावी उपकरण हैं।

उपलब्ध साहित्य के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक माध्यमों ने भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में बहुआयामी भूमिका निभाई है। रेडियो और दूरदर्शन ने लोक संगीत को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई, जबकि डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया ने उसे वैश्विक मंच उपलब्ध कराया। रिकॉर्डिंग तकनीकों और डिजिटल अभिलेखन ने लोक परंपराओं के संरक्षण को सुदृढ़ बनाया, वहीं ऑनलाइन मंचों ने लोक कलाकारों के लिए नए अवसरों का सृजन किया। इसके बावजूद यह भी स्पष्ट है कि आधुनिक माध्यम केवल संरक्षण के साधन नहीं हैं, बल्कि वे लोक संगीत के स्वरूप और प्रस्तुति शैली को भी प्रभावित करते हैं। इसलिए इनके प्रभावों का मूल्यांकन केवल तकनीकी दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी किया जाना आवश्यक है। यही प्रश्न अगले खंड में संरक्षण, परिवर्तन और भविष्य की दिशा के संदर्भ में विस्तृत रूप से चर्चा का विषय बनेगा।

4. संरक्षण, परिवर्तन एवं भविष्य की दिशा

भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में आधुनिक माध्यमों की भूमिका का मूल्यांकन केवल उनके सकारात्मक योगदानों तक सीमित नहीं किया जा सकता। आधुनिक माध्यमों ने जहाँ लोक संगीत को नई दृश्यता, व्यापक श्रोतावर्ग तथा संरक्षण के नए साधन प्रदान किए हैं, वहीं उन्होंने लोक संगीत की संरचना, प्रस्तुति शैली और सांस्कृतिक अर्थों को भी प्रभावित किया है। इसलिए लोक संगीत और आधुनिक माध्यमों के संबंध को संरक्षण एवं परिवर्तन दोनों दृष्टियों से समझना आवश्यक है।

लोक संगीत का संरक्षण केवल गीतों, धुनों या वाद्यों को सुरक्षित रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन सांस्कृतिक संदर्भों, सामाजिक संबंधों और सामुदायिक अनुभवों को भी संरक्षित करने का प्रयास है जिनसे लोक संगीत का जन्म और विकास हुआ है। आधुनिक माध्यमों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल रिकॉर्डिंग, ऑडियो-वीडियो अभिलेखन तथा ऑनलाइन संग्रहों ने अनेक लोक परंपराओं को दस्तावेजीकृत करने का अवसर प्रदान किया है। पहले जो लोकगीत केवल सीमित समुदायों में प्रचलित थे, वे अब डिजिटल रूप में संरक्षित किए जा सकते हैं तथा शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और संगीत प्रेमियों के लिए उपलब्ध कराए जा सकते हैं (दुबे, 2014)।

डिजिटल अभिलेखन की प्रक्रिया विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भारतीय लोक संगीत का बड़ा भाग मौखिक परंपरा पर आधारित है। मौखिक परंपराओं में ज्ञान का हस्तांतरण स्मृति और प्रदर्शन के माध्यम से होता है, जिसके कारण समय के साथ अनेक परंपराएँ लुप्त हो सकती हैं। डिजिटल तकनीकों ने इस समस्या के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों, सांस्कृतिक संस्थानों और शोध संगठनों द्वारा संचालित अभिलेखन परियोजनाओं ने अनेक दुर्लभ लोकगीतों और लोक वाद्य परंपराओं को संरक्षित करने का कार्य किया है (यूनेस्को, 2011)।

हालाँकि संरक्षण की इस प्रक्रिया के साथ परिवर्तन की प्रक्रिया भी जुड़ी हुई है। जब लोक संगीत

आधुनिक माध्यमों के माध्यम से व्यापक श्रोतावर्ग तक पहुँचता है, तो उसके प्रस्तुतीकरण में भी परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं। अनेक बार लोकगीतों को आधुनिक संगीत वाद्यों, तकनीकी प्रभावों तथा लोकप्रिय संगीत की शैली के साथ प्रस्तुत किया जाता है ताकि वे समकालीन श्रोताओं के लिए अधिक आकर्षक बन सकें। इस प्रक्रिया को कुछ विद्वान लोक संगीत के विकास का स्वाभाविक चरण मानते हैं, जबकि अन्य इसे प्रामाणिकता के लिए चुनौती के रूप में देखते हैं (वर्मा, 2017)।

प्रामाणिकता (Authenticity) का प्रश्न लोक संगीत अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। लोक संगीत की पहचान उसके स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भ, भाषा, शैली तथा प्रस्तुति पर आधारित होती है। जब किसी लोक परंपरा को व्यावसायिक उद्देश्यों से परिवर्तित किया जाता है, तो उसके मूल स्वरूप में परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है। कई बार लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए लोकगीतों को इस प्रकार रूपांतरित किया जाता है कि उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता कम हो जाती है (सिंह, 2016)। इसलिए संरक्षण और रूपांतरण के मध्य संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

व्यावसायीकरण (Commercialization) भी आधुनिक माध्यमों से जुड़ा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। डिजिटल मंचों और मनोरंजन उद्योग के विस्तार ने लोक संगीत को नए बाजार उपलब्ध कराए हैं। इससे लोक कलाकारों को आर्थिक लाभ प्राप्त होने की संभावनाएँ बढ़ी हैं। अनेक लोक कलाकारों ने सोशल मीडिया और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से व्यापक पहचान अर्जित की है तथा उनकी प्रस्तुतियाँ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हुई हैं (चौधरी, 2019)। यह स्थिति लोक संगीत के संवर्धन के लिए सकारात्मक मानी जा सकती है।

दूसरी ओर, व्यावसायीकरण के कारण लोक संगीत को कई बार केवल मनोरंजन की सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी परिस्थितियों में उसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि गौण हो सकती है। लोक संगीत का बाजारीकरण उसकी मूल सामुदायिक भावना और सांस्कृतिक अर्थों को प्रभावित कर सकता है (कुमार, 2018)। इसलिए यह आवश्यक है कि लोक संगीत के आर्थिक

विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए।

लोक कलाकारों की बदलती स्थिति भी आधुनिक माध्यमों के प्रभाव का एक महत्वपूर्ण आयाम है। पहले लोक कलाकारों की पहचान मुख्यतः स्थानीय समुदायों तक सीमित रहती थी, जबकि वर्तमान समय में डिजिटल मंचों ने उन्हें व्यापक दृश्यता प्रदान की है। कलाकार अब अपनी प्रस्तुतियों को स्वयं रिकॉर्ड कर सकते हैं, ऑनलाइन साझा कर सकते हैं और सीधे श्रोताओं से जुड़ सकते हैं। इससे उनकी सामाजिक पहचान और सांस्कृतिक भूमिका दोनों में परिवर्तन आया है (चौधरी, 2019)। साथ ही, कलाकारों को नई आर्थिक संभावनाएँ भी प्राप्त हुई हैं।

सरकारी एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की भूमिका लोक संगीत संरक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत सरकार, संगीत नाटक अकादमी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा विभिन्न राज्य स्तरीय सांस्कृतिक संस्थाएँ लोक संगीत के संरक्षण और प्रोत्साहन के लिए कार्य कर रही हैं। लोक उत्सवों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शोध परियोजनाओं तथा अभिलेखन योजनाओं के माध्यम से इन संस्थाओं ने लोक परंपराओं के संरक्षण में योगदान दिया है (माथुर, 2014)। आधुनिक माध्यमों के साथ इन संस्थाओं का सहयोग लोक संगीत संरक्षण की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बना सकता है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय लोक संगीत की स्थिति भी उल्लेखनीय है। डिजिटल मंचों ने भारतीय लोक संगीत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने का कार्य किया है। आज विभिन्न देशों के श्रोता भारतीय लोक परंपराओं को सुन और समझ सकते हैं। इससे सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा मिला है तथा भारतीय लोक संगीत की वैश्विक पहचान मजबूत हुई है (फैनकोर्ट, 2019)। यह स्थिति लोक संगीत के संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय पहचान से इसके प्रति जागरूकता और रुचि दोनों में वृद्धि होती है।

भविष्य की दृष्टि से देखा जाए तो आधुनिक माध्यम भारतीय लोक संगीत के संरक्षण के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अभिलेखन, वर्चुअल संग्रहालय तथा

ऑनलाइन शिक्षण मंच जैसी तकनीकें लोक संगीत के संरक्षण और प्रसार को नई दिशा दे सकती हैं। इन तकनीकों के माध्यम से लोक संगीत को केवल संरक्षित ही नहीं किया जा सकता, बल्कि नई पीढ़ियों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाया भी जा सकता है। भविष्य में यदि तकनीकी विकास और सांस्कृतिक संरक्षण की नीतियाँ एक-दूसरे के पूरक रूप में कार्य करें, तो भारतीय लोक संगीत के संरक्षण की संभावनाएँ और अधिक सुदृढ़ हो सकती हैं।

उपलब्ध साहित्य के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक माध्यम भारतीय लोक संगीत के लिए अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने लोक संगीत को नई दृश्यता, व्यापक पहुँच और संरक्षण के प्रभावी साधन उपलब्ध कराए हैं, किंतु साथ ही प्रामाणिकता, व्यावसायीकरण और सांस्कृतिक रूपांतरण जैसे प्रश्न भी उत्पन्न किए हैं। इसलिए लोक संगीत के संरक्षण की किसी भी रणनीति में तकनीकी नवाचारों के साथ सांस्कृतिक संवेदनशीलता और सामुदायिक सहभागिता को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए। इसी संतुलित दृष्टिकोण के माध्यम से भारतीय लोक संगीत की समृद्ध परंपराओं को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है।

5. निष्कर्ष

भारतीय लोक संगीत भारत की सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक स्मृति तथा सामुदायिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह केवल संगीत की एक विधा नहीं, बल्कि लोक जीवन की अनुभूतियों, परंपराओं, विश्वासों तथा सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति है। लोक संगीत के माध्यम से विभिन्न समुदाय अपनी ऐतिहासिक स्मृतियों, सामाजिक अनुभवों और सांस्कृतिक पहचान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करते रहे हैं। इस दृष्टि से लोक संगीत भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक अमूल्य स्वरूप है।

प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में आधुनिक

माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करना था। उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक संचार माध्यमों ने लोक संगीत के संरक्षण की प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की है। रेडियो और दूरदर्शन जैसे पारंपरिक जनसंचार माध्यमों ने लोक संगीत को क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर निकालकर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। इन माध्यमों ने लोक कलाकारों को मंच प्रदान किया तथा विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक परंपराओं को व्यापक श्रोतावर्ग तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (माथुर, 2014; वर्मा, 2017)।

डिजिटल युग में इंटरनेट, सोशल मीडिया तथा ऑनलाइन मंचों ने लोक संगीत संरक्षण और संवर्धन की संभावनाओं को और अधिक विस्तृत किया है। यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम तथा अन्य डिजिटल मंचों ने लोक कलाकारों और श्रोताओं के बीच प्रत्यक्ष संवाद स्थापित किया है। इन माध्यमों के द्वारा लोक संगीत न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहुँच सका है (चौधरी, 2019)। परिणामस्वरूप अनेक लोक कलाकारों को नई पहचान मिली है तथा लोक संगीत की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि डिजिटल अभिलेखन लोक संगीत संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। डिजिटल रिकॉर्डिंग, ऑडियो-वीडियो संग्रहण तथा ऑनलाइन अभिलेखागारों ने अनेक दुर्लभ लोक परंपराओं को संरक्षित करने में सहायता की है। चूँकि भारतीय लोक संगीत का बड़ा भाग मौखिक परंपरा पर आधारित है, इसलिए डिजिटल दस्तावेजीकरण उसके दीर्घकालिक संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है (यूनेस्को, 2011)। यह प्रक्रिया शोध, शिक्षा तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए भी महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

हालाँकि आधुनिक माध्यमों के सकारात्मक प्रभावों के साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। व्यावसायीकरण, सांस्कृतिक रूपांतरण, प्रामाणिकता का संकट तथा कॉपीराइट संबंधी प्रश्न लोक संगीत संरक्षण के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। कई बार लोकप्रियता प्राप्त करने के उद्देश्य से लोक संगीत के मूल स्वरूप में परिवर्तन किया जाता है, जिससे उसकी

सांस्कृतिक विशिष्टता प्रभावित हो सकती है (सिंह, 2016)। इसी प्रकार डिजिटल मंचों पर सांस्कृतिक सामग्री के अनियंत्रित उपयोग से कलाकारों के बौद्धिक अधिकारों से जुड़े प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि आधुनिक माध्यम केवल संरक्षण के उपकरण नहीं हैं, बल्कि वे लोक संगीत के स्वरूप और प्रस्तुति को भी प्रभावित करते हैं। इसलिए लोक संगीत के संरक्षण की प्रक्रिया को केवल तकनीकी दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। इसके लिए सांस्कृतिक संदर्भों, सामुदायिक सहभागिता तथा परंपरागत ज्ञान प्रणालियों को भी समान महत्व देना आवश्यक है। लोक संगीत का वास्तविक संरक्षण तभी संभव है जब उसके सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संदर्भों को भी संरक्षित रखा जाए।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि आधुनिक माध्यमों ने भारतीय लोक संगीत को नई दृश्यता, व्यापक पहुँच तथा संरक्षण के प्रभावी साधन प्रदान किए हैं। उन्होंने लोक परंपराओं को दस्तावेजीकृत करने, कलाकारों को मंच उपलब्ध कराने तथा नई पीढ़ियों तक सांस्कृतिक विरासत पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि कुछ चुनौतियाँ विद्यमान हैं, फिर भी आधुनिक माध्यम भारतीय लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। भविष्य में यदि तकनीकी नवाचारों को सांस्कृतिक संरक्षण की नीतियों और सामुदायिक सहभागिता के साथ जोड़ा जाए, तो भारतीय लोक संगीत की समृद्ध परंपराओं को अधिक प्रभावी ढंग से संरक्षित और विकसित किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

1. भारतीय लोक संगीत की विविध परंपराओं के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक डिजिटल अभिलेखागार स्थापित किए जाने चाहिए।
2. लोक कलाकारों को आर्थिक सहायता, प्रशिक्षण तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि वे आधुनिक मंचों का प्रभावी उपयोग कर सकें।

3. विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में लोक संगीत एवं लोक संस्कृति के अध्ययन को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।
4. सोशल मीडिया तथा डिजिटल मंचों पर लोक संगीत की दृश्यता बढ़ाने के लिए विशेष सांस्कृतिक अभियान चलाए जाने चाहिए।
5. लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
6. कॉपीराइट संरक्षण तथा कलाकारों के बौद्धिक संपदा अधिकारों को सुदृढ़ बनाने हेतु प्रभावी नीतियाँ विकसित की जानी चाहिए।
7. सरकारी एवं गैर-सरकारी सांस्कृतिक संस्थाओं को लोक संगीत के दस्तावेजीकरण, शोध तथा प्रचार-प्रसार के लिए संयुक्त प्रयास करने चाहिए।
8. लोक संगीत और आधुनिक तकनीकों के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए ऐसी रणनीतियाँ विकसित की जानी चाहिए जो सांस्कृतिक प्रामाणिकता को बनाए रखते हुए व्यापक प्रसार को संभव बना सकें।

***संगीत विभाग**
मां शबरी राजकीय कन्या महाविद्यालय
गणगोरी बाजार, जयपुर

संदर्भ सूची

1. चौधरी, आर. (2019). *सोशल मीडिया और लोक कलाकारों की बदलती भूमिका.* नई दिल्ली: संस्कृति प्रकाशन।
2. दुबे, एस. (2014). *भारतीय लोक संगीत का दस्तावेजीकरण और संरक्षण.* वाराणसी: भारतीय लोक कला संस्थान।

3. फैनकोर्ट, डी. (2019). *डिजिटल संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण*. लंदन: रूटलेज।
4. कुमार, ए. (2018). डिजिटल मीडिया और भारतीय लोक संगीत का वैश्वीकरण. *भारतीय संस्कृति अध्ययन पत्रिका*, 10(2), 45–58।
5. माथुर, पी. (2014). आकाशवाणी और भारतीय लोक संगीत का प्रसार. *मीडिया एवं संस्कृति अध्ययन*, 6(1), 23–37।
6. मिश्र, आर. (2015). *भारतीय लोक संगीत की परंपराएँ और स्वरूप*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
7. रानाडे, अशोक दामोदर. (2011). *Music Contexts: A Concise Dictionary of Hindustani Music*. नई दिल्ली: प्रमिला एंड कंपनी।
8. शर्मा, प्रेमलता. (2012). *भारतीय संगीत का सौन्दर्यशास्त्र*. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स।
9. सिंह, वी. (2016). वैश्वीकरण और लोक संस्कृति का बदलता स्वरूप. *लोक संस्कृति शोध पत्रिका*, 8(1), 67–81।
10. यूनेस्को. (2011). *अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु दिशा-निर्देश*. पेरिस: यूनेस्को।
11. वर्मा, एस. (2017). दूरदर्शन और भारतीय लोक कलाओं का प्रसार. *जनसंचार समीक्षा*, 9(2), 52–66।